

वैकल्प पुं. (तत्.) 1. एकांगी होने का भाव या क्रिया 2. विकल्प का भाव या स्थिति असमंजसता, अनिश्चता 3. ऐसी परिस्थिति जिसमें व्यक्ति के पास दो या उससे अधिक वस्तुओं में से एक को चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

वैकल्पिक वि. (तत्.) 1. जो किसी एक पक्ष में हो, एकांगी 2. संदिग्ध, अनिश्चयात्मक 3. दो या कइयों में से कोई एक जो अपनी इच्छा से चुना या ग्रहण किया जा सके, ऐच्छिक।

वैकल्य वि. (तत्.) व्याकुलता, विक्षोभ, घबराहट, उत्तेजना, दुर्बलता, कमजोरी; अपूर्णता, अभाव, अनस्तित्व; अंगहीनता, विकलांगता।

वैकांत पुं. (तत्.) मणि विशेष, चुन्नी।

वैकारिक वि. (तत्.) विकार संबंधी, बिगाड़ा हुआ, विकृत, परिवर्तनशील, संशोधनात्मक, विकार के कारण होने वाला।

वैकाल पुं. (तत्.) 1. तीसरा पहर, अपराह्न, दोपहर के बाद का समय 2. सायंकाल, शाम का समय।

वैकालिक वि. (तत्.) सायंकाल संबंधी, शाम को होने वाला, वैकालीन, सांध्य, संध्याकाल का।

वैकाली वि. (तत्.) तीसरे पहर का वैकाल, वैकालिक, तीसरे पहर का जलपान।

वैकालीन वि. (तत्.) दे. वैकालिक।

वैकुंठ पुं. (तत्.) 1. पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु का निवास स्थान, कुंठारहित स्थान 2. विष्णु, बैकुंठ में स्थित देवगण 3. स्वर्ग 4. इंद्र 5. तुलसी।

वैकृत पुं. (तत्.) 1. विकार, खराबी 2. परिवर्तित, बदला हुआ 3. वीभत्स रस, वीभत्स रस का आलंबन जैसे- रक्त, मज्जा, मांस आदि वि. 1. जो विकार से उत्पन्न हुआ हो 2. जो जल्दी ठीक नहो सके, दुःसाध्य; विकारग्रस्त, परिवर्तित, संशोधित।

वैकृतिक वि. (तत्.) 1. परिवर्तित, संशोधित 2. विकृतिसेसंबंधित, विकृति से उत्पन्न, नैमित्तिक।

वैकृत्य पुं. (तत्.) परिवर्तन, रद्दोबदल, विकार, दुर्दशा, घृणा, अरुचि, उद्वेग, वीभत्स रस।

वैक्रम वि. (तत्.) विक्रम का, विक्रम संबंधी, विक्रमीय।

वैक्रमीय वि. (तत्.) विक्रम का, विक्रम संबंधी।

वैक्रांत पुं. (तत्.) चुन्नी नामक मणि।

वैकलव्य पुं. (तत्.) 1. विकलता, विक्षोभ, व्याकुलता, गड़बड़ी, घबड़ाहट, हलचल, हड़बड़ी 2. शोक, पीड़ा 3. अस्तव्यस्तता, मानसिक अस्थिरता, संताप।

वैक्सीन स्त्री. (अं.) टीका-द्रव्य, टीका, इंजेक्शन द्वारा चिकित्सा या रोग प्रतिरोधक ओषधि को शरीर में देना।

वैक्सीनेशन स.क्रि. (अं.) वैक्सीन की क्रिया या भाव, टीका लगाने का काम।

वैखरी स्त्री. (तत्.) 1. वह स्वर जो उच्च, गंभीर और बहुत स्पष्ट हो 2. वाकशक्ति, वाणी का व्यक्त रूप 3. वाग्देवी, वाणी की देवी सरस्वती 4. वाणी के चार भेदों में एक।

वैखानस पुं. (तत्.) 1. वह जो वानप्रस्थ आश्रम में हो, वानप्रस्थी 2. एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो वन में रहते थे 3. कृष्ण यजुर्वेद की चार प्रधान शाखाओं में से एक, जिसमें उक्त प्रकार के यतियों के आचारों धर्मों आदि का विवेचन हो।

वैगन पुं. (तत्.) रेलों में मालगाड़ी का डिब्बा, माल-डिब्बा।

वैगुण्य वि. (तत्.) अच्छे गुणों का अभाव, विगुणता, गुणहीनता, ऐब, दोष, अवगुण, त्रुटि, वैषम्य, विरुद्धता, नीचता, क्षुद्रता, अपराध, अनिपुणता।

वैग्रहिक वि. (तत्.) विग्रह से संबंधित, शरीर-संबंधी, शारीरिक।

वैचक्षण्य पुं. (तत्.) विचक्षणता, चातुरी, निपुणता, योग्यता, चातुर्य, कुशलता, कौशल।